

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি॥

শ্রী শঙ্করাচার্য রিরচিতম্
॥শ্রী কৃষ্ণাষ্টকম্ ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
॥ श्री कृष्णार्ष्टकम् ॥

श्रिया श्लिष्टो विष्णुः स्थिरचररपुरेदविषयो
धियां सार्क्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताजनयनः।
गदी शङ्गी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णार्क्षिर्विषयः ॥ १ ॥

यतः सर्वं जातं विषदनिलमुख्यं जगदिदं
स्थितो निःशेषं योषति निजसुखांशेन मधुहा।
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णार्क्षिर्विषयः ॥ २ ॥

असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणैः
निरुध्येदं चिन्तं हृदि विलयमानीय सकलम्।
यमीड्यं पश्यान्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णार्क्षिर्विषयः ॥ ३ ॥

पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो रदति जगतामीशममलम्।
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरन्गां मोक्षदमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णार्क्षिर्विषयः ॥ ४ ॥

महेन्द्रादिदेवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं कचिदपि कृतो यतकृतिमते।
करिन्नादेर्गर्भं परिहरति योसौ विजयिनः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णार्क्षिर्विषयः ॥ ५ ॥

विना यस्य ध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखां
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता।
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णार्क्षिर्विषयः ॥ ६ ॥

নরাতঙ্কোকোত্তকঃ শরণশরণো ভ্রান্তিহরণো
ঘনশ্যামো বামো ব্রজশিশুরযস্যোজুনসখঃ।
স্বযম্ভূভূতানাং জনক উচিতাচারসুখদঃ
শরণ্যো লোকেশো মম ভবতু কৃষ্ণেগক্ষিরিষযঃ ॥ ৭ ॥

যদা ধর্মগ্নানিভরতি জগতাং ক্ষোভকরণী
তদা লোকস্বামী প্রকটিতরপুঃ সেতুধৃগজঃ।
সতাং ধাতা স্বচ্ছা নিগমগগনীতো ব্রজপতিঃ
শরণ্যো লোকেশো মম ভবতু কৃষ্ণেগক্ষিরিষযঃ ॥ ৮ ॥

ইতি হরিরখিলাস্মারাধিতঃ শঙ্করেণ
শ্রুতিরিশদগুণোসৌ মাতৃমোক্ষার্থমাদ্যঃ।
যতিররনিকটে শ্রীযুক্ত আরিবর্ভূর
স্বগুণবৃত উদারঃ শঙ্খচক্রাজহস্তঃ ॥ ৯ ॥

॥ইতি শ্রী কৃষ্ণাষ্টকম্ সমাপ্তম্ ॥